

अध्याय 14

अपठित गद्यांश

बोध-शक्ति के अन्तर्गत गद्यांशों पर आधारित प्रश्न पूछे जा सकते हैं। ऐसे गद्यांश प्रायः जो पाठ्य-पुस्तकों से सम्बन्धित नहीं होते। इनके द्वारा परीक्षार्थियों की बौद्धिक क्षमता और भाषा-दक्षता का परीक्षण किया जाता है। साथ ही इन अपठित गद्यांशों से उनकी तर्क क्षमता, संवेदनशीलता और स्वतन्त्र अध्ययनशीलता की भी जाँच की जाती है। लगभग सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में अपठित गद्यांशों पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में चार विकल्प दिए गए होते हैं। अनेक बार विकल्प भ्रम उत्पन्न करने वाले और अत्यन्त निकटस्थ होते हैं। परीक्षार्थी को एकाग्रता और धैर्यपूर्वक सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन करना होता है।

गद्यांश 1

चुनाव पूर्व सर्वेक्षण एवं एक्जिट पोल का लोकतन्त्र में क्या महत्त्व है? यह प्रश्न विचारणीय है। लोकतन्त्र रूपी वृक्ष जनता द्वारा रोपा और सींचा जाता है, इसके पल्लवन एवं पुष्पन में मीडिया की विशेष भूमिका होती है। भारत एक लोकतान्त्रिक राष्ट्र है। लोकतान्त्रिक राष्ट्र में नागरिकों को विशिष्ट अधिकार और स्वतन्त्रताएँ प्राप्त होती हैं। भारतीय संविधान ने भी अनुच्छेद 19 (i) के अन्तर्गत नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता प्रदान की है, लेकिन जनता के व्यापक हित पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली स्वतन्त्रता बाधित भी की जानी चाहिए।

भारत जैसे अल्पशिक्षित देश में इस प्रकार के सर्वेक्षण अनुचित हैं। देश की आम जनता पर मीडिया द्वारा किए जाने वाले चुनाव पूर्व सर्वेक्षण और चुनाव के तुरन्त पश्चात् किए जाने वाले एक्जिट पोल का भ्रामक प्रभाव पड़ता है। वह विजयी होती पार्टियों की ओर झुक जाती है। आज भी सामान्य लोगों के बीच ये आम धारणा है कि हम अपना वोट खराब नहीं करेंगे, जीतने वाले प्रत्याशी को ही वोट देंगे।

वर्तमान में बाजारवाद अपने उत्कर्ष पर है और मीडिया इसके दुष्प्रभाव से अनछुआ नहीं है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आज मीडिया भी अधिकाधिक संख्या में प्रसार और धन पाने को बुभुक्षित है। मीडिया सत्ताधारी और मजबूत राजनीतिक दलों के प्रभाव में भी रहता है। ये दल धन के बल पर लोक रुझान को अपने पक्ष में दिखाने में सफल हो जाते हैं और सम्पूर्ण चुनाव प्रक्रिया को ही धता बता देते हैं। इस प्रकार सत्ता एवं धन इन सर्वेक्षणों को प्रभावित करते हैं। इन्हें दूध का धुला नहीं कहा जा सकता। भारत जैसे लोकतान्त्रिक राष्ट्र में जहाँ जनता निर्वाचन प्रक्रिया के माध्यम से अपना मत अभिव्यक्त करती है, वहाँ इन सर्वेक्षणों के औचित्य-अनौचित्य पर विचार किया जाना चाहिए।

न्यायालय को यदि संविधान के अनुसार चलने की बाध्यता है, तो संसद को संविधान में संशोधन करने की शक्ति प्राप्त है। वह अपने अधिकारों का प्रयोग करके कोई सार्थक प्रयास कर सकती है।

1. प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली स्वतन्त्रता क्यों बाधित होनी चाहिए?

- श्रेष्ठ लोकतन्त्र की स्थापना हेतु
- वोट के सही उपयोग हेतु
- साफ-सुथरी चुनाव प्रक्रिया हेतु
- लोकहित को सर्वोपरि रखने हेतु

2. लेखक ने 'दूध का धुला न होना' किसे कहा है?

- मीडिया से सम्बन्धित लोगों को
- चुनाव पूर्व सर्वेक्षण एवं एक्जिट पोल को
- सत्ताधारी और बड़े राजनीतिक दलों को
- संसद और न्यायालय को

3. 'सम्पूर्ण चुनाव प्रक्रिया को ही धता बता देते हैं'

इस कथन का भाव है

- विश्लेषणात्मक
- प्रतिक्रियात्मक
- उपहासात्मक
- सकारात्मक

4. गद्यांश से निष्कर्ष निकलता है कि

- निर्वाचन में मीडिया की भूमिका संदिग्ध रहती है
- भारत में चुनाव पूर्व सर्वेक्षण निरर्थक हैं
- चुनाव पूर्व सर्वेक्षण एवं एक्जिट पोल प्रतिबन्धित हैं
- मीडिया धन से प्रभावित होता है

5. उपरोक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए

- चुनाव पूर्व सर्वेक्षण
- चुनाव पूर्व सर्वेक्षण एवं एक्जिट पोल
- चुनाव प्रक्रिया
- लोकतन्त्र और चुनाव सर्वेक्षण

गद्यांश 2

शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु अनिवार्य है। शिक्षा के बिना मनुष्य विवेकशील और शिष्ट नहीं बन सकता। विवेक से मनुष्य में सही और गलत का चयन करने की क्षमता उत्पन्न होती है। विवेक से ही मनुष्य के भीतर उसके चहुँओर नित्य प्रति होते घटनाक्रमों के प्रति एक छिद्रान्वेषी दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। शिक्षा ही मानव को मानव के प्रति मानवीय भावनाओं से पोषित करती है। शिक्षा से मनुष्य अपने परिवेश के प्रति जाग्रत होकर कर्तव्याभिमुख हो जाता है। 'स्व' से 'पर' की ओर अग्रसर होने लगता है। निर्बल की सहायता करना, दुखियों के दुःख दूर करने का प्रयास करना, दूसरों के दुःख से दुःखी हो जाना और दूसरों के सुख से स्वयं सुख का अनुभव करना जैसी बातें एक शिक्षित मानव में सरलता से देखने को मिल जाती हैं। इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादि पढ़कर विद्यार्थी विद्वान् ही नहीं बनता वरन् उसमें एक विशिष्ट जीवन दृष्टि, रचनात्मकता और परिपक्वता का सुजन भी होता है। शिक्षित सामाजिक परिवेश में व्यक्ति अशिक्षित सामाजिक परिवेश की तुलना में सदैव ही उच्च स्तर पर जीवन यापन करता है।

परन्तु आज शिक्षा का अर्थ बदल रहा है। शिक्षा भौतिक आकांक्षा की चेरी बनती जा रही है। व्यावसायिक शिक्षा के अन्धानुकरण में छात्र सैद्धान्तिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं। रूस की क्रान्ति, फ्रांस की क्रान्ति, अमेरिकी क्रान्ति, समाजवाद, पूँजीवाद, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक मूल्यों आदि की सामान्य जानकारी भी व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को नहीं है। यह शिक्षा का विशुद्ध रोजगारकरण है। शिक्षा के प्रति इस प्रकार का संकुचित दृष्टिकोण अपनाकर विवेकशील नागरिकों का निर्माण नहीं किया जा सकता। भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा रोजगार का साधन न होकर साध्य हो गई है। इस कुप्रवृत्ति पर अंकुश लगाना अनिवार्य है। जहाँ मानविकी के छात्रों को पत्रकारिता, साहित्य-सृजन, विज्ञापन, जनसम्पर्क इत्यादि कोर्स भी कराए जाने चाहिए ताकि उन्हें रोजगार के लिए न भटकना पड़े, वहीं व्यावसायिक कोर्स करने वाले छात्रों को मानविकी के विषय; जैसे—इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र व दर्शन आदि का थोड़ा बहुत अध्ययन अवश्य कराना चाहिए ताकि समाज को विवेकशील नागरिक प्राप्त होते रहें, तभी समाज में सन्तुलन बना रह सकेगा।

- छिट्टान्वेषी दृष्टिकोण से लेखक का क्या तात्पर्य है?
 - समन्वय की भावना उत्पन्न होना
 - उपयुक्त और अनुपयुक्त का बोध होना
 - मानवीयता का विकास होना
 - विवेकशीलता का विकास होना
- “शिक्षा ही मानव को मानव के प्रति मानवीय भावनाओं से पोषित करती है।” इस कथन के लिए उपयुक्त विकल्प चुनिए
 - कटुता
 - सहृदयता की भावना का विकास
 - विनम्रता की भावना का विकास
 - घृणा की भावना का विकास
- शिक्षा से मनुष्य ‘स्व’ से ‘पर’ की ओर अभिगमन करने लगता है, क्यों?
 - शिक्षा मनुष्य को संवेदनशील बनाती है
 - शिक्षा से मनुष्य में सेवा भाव उत्पन्न होता है
 - शिक्षा मनुष्य को कर्तव्यपरायण बनाती है
 - शिक्षा मनुष्य में मानवीय भाव भरती है
- वर्तमान शिक्षा भौतिक आकांक्षा की चेरी किस प्रकार बन गई है?
 - शिक्षा के मात्र व्यावसायिक पक्ष को देखा जा रहा है
 - शिक्षा को मात्र सैद्धान्तिक बनाकर रख दिया गया है
 - शिक्षा रचनात्मकता और परिपक्वता की सर्जक बन गई है
 - शिक्षा को मात्र रोजगार से सम्बद्ध कर दिया गया है
- उपरोक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
 - शिक्षा
 - शिक्षा का जीवन में महत्व
 - शिक्षा का बदलता स्वरूप
 - सैद्धान्तिक व व्यावसायिक शिक्षा

गद्यांश 3

पुरुषार्थ दार्शनिक विषय है, पर दर्शन का जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। वह थोड़े-से विद्यार्थियों का पाठ्य विषय मात्र नहीं है। प्रत्येक समाज को एक दार्शनिक मत स्वीकार करना होता है। उसी के आधार पर उसकी राजनीतिक, सामाजिक और कौटुम्बिक व्यवस्था का व्यूह खड़ा होता है। जो समाज अपने वैयक्तिक और सामूहिक जीवन को केवल प्रतीयमान उपयोगिता के आधार पर चलाना चाहेगा उसको बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। एक विभाग के आदर्श दूसरे विभाग के आदर्श से टकराएँगे। जो बात एक क्षेत्र में ठीक जँचेगी वही दूसरे क्षेत्र में अनुचित कहलाएगी और मनुष्य के लिए अपना कर्तव्य स्थिर करना कठिन हो जाएगा। इसका तमाशा आज दीख पड़ रहा है। चोरी करना बुरा है, पर पराये देश का शोषण करना बुरा नहीं। झूठ बोलना बुरा है, पर राजनैतिक क्षेत्र में सच बोलने पर अड़े रहना मूर्खता है।

घरवालों के साथ, देशवासियों के साथ और परदेशियों के साथ बर्ताव करने के लिए अलग-अलग आचारावलियाँ बन गई हैं। इससे विवेकशील मनुष्य को कष्ट होता है।

- सामाजिक व्यवस्था को चलाने के लिए आवश्यकता होती है
 - आचार संहिता बनाने की
 - विशेष दर्शन बनाने की
 - विरोधाभासों को दूर करने की
 - एक सफल रणनीति बनाने की
- समाज के लिए दर्शन महत्वपूर्ण है, क्योंकि
 - इससे समाज की व्यवस्था संचालित होती है
 - इससे सामाजिक जीवन की उपयोगिता में वृद्धि होती है
 - यह समाज को सही दृष्टि प्रदान करता है
 - इससे राजनीति की रणनीति निर्धारित होती है
- समाज में जीवन प्रतीयमान उपयोगिता के आधार पर नहीं चल सकता, क्योंकि
 - सभी व्यक्तियों का जीवन दर्शन भिन्न होता है
 - आचार संहिताएँ सभी के लिए अलग-अलग हैं
 - एक ही बात भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उचित या अनुचित हो सकती है
 - सभी मनुष्य विवेकशील नहीं होते
- विवेकशील मनुष्य को कष्ट पहुँचाने वाले विरोधाभास हैं
 - सभी व्यक्तियों पर एक ही दर्शन थोपने का प्रयास
 - परिवार, देश और विदेशी लोगों लिए पृथक् आचार संहिता
 - समाज विशेष के लिए नैतिक मूल्य और नियमों का निर्धारण
 - दर्शन के अनुसार राजनीतिक, सामाजिक तथा पारिवारिक-व्यवस्था का निर्धारण
- गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है
 - समाज और दर्शन
 - दर्शन और सामाजिक आचरण
 - दर्शन और सामाजिक व्यवस्था
 - समाज में दर्शन का महत्व

गद्यांश 4

सौन्दर्य की परख अनेक प्रकार से की जाती है। बाह्य सौन्दर्य की परख समझना तथा उसकी अभिव्यक्ति करना सरल है। जब रूप के साथ चरित्र का भी स्पर्श हो जाता है तब उसमें रसास्वादन की अनुभूति भी होती है। एक वस्तु सुन्दर तथा मनोहर कही जा सकती है, परन्तु सुन्दर वस्तु केवल इन्द्रियों को सन्तुष्ट करती है, जबकि मनोरम वस्तु चित्त को भी आनन्दित करती है। इस दृष्टि से कवि जयदेव का वसन्त चित्रण सुन्दर है तथा कालिदास का प्रकृति वर्णन मनोहर है, क्योंकि उसमें चरित्र की प्रधानता है। ‘सुन्दर’ शब्द संकीर्ण है, जबकि ‘मनोहर’ शब्द व्यापक तथा विस्तृत है। साहित्य में साधारण वस्तु भी विशेष प्रतीत होती है तथा उसे मनोहर कहते हैं।

- सौन्दर्य की परख की जाती है
 - आनन्द की मात्रा के आधार पर
 - इन्द्रियों की सन्तुष्टि के आधार पर
 - रूप के आधार पर
 - मनोहरता के आधार पर
- रसास्वादन की अनुभूति का बोध होता है
 - चरित्र स्पर्शी रूप से
 - चित्त के आनन्द से
 - सौन्दर्य अभिव्यक्ति से
 - इन्द्रिय सुख मात्र से
- कवि जयदेव का ‘वसन्त चित्रण’ सुन्दर है, पर मनोहर नहीं, क्योंकि
 - यह इन्द्रिय सुखदायक है
 - इसमें केवल सौन्दर्य वर्णन है
 - यह चित्त को आनन्दित नहीं करता
 - इसमें अनुभूति नहीं है
- कालिदास के प्रकृति वर्णन का आधार है
 - उसकी प्रकृति/अभिव्यक्ति
 - उसकी चरित्र प्रमुखता
 - उसकी मनोहरता
 - उसका सौन्दर्य
- ऊपर दिए गए गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है
 - साहित्य और सौन्दर्य
 - अभिव्यक्ति की अनुभूति
 - सुन्दरता बनाम मनोहरता
 - सुन्दरता की संकीर्णता

गद्यांश 5

विज्ञान शब्द की परिभाषा और क्षेत्र तथा इसकी प्रौद्योगिकी से भिन्नता के विषय में स्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक है। कुछ शक्तिशाली व्यक्तियों में, जिनके पास मानव जाति के भविष्य की चाबी है, शायद विज्ञान ही केवल एक महत्वपूर्ण अनुपम स्थिति में बिना किसी आपत्ति के सबके द्वारा स्वीकार किया जाने वाला विषय है। आज विज्ञान से हमारा अर्थ हमारे विश्व और उसके परिवेश के मूल ज्ञान से, इसके सभी क्षेत्रों में ज्ञान की नियन्त्रित और नियमित खोज से है, परन्तु इस ज्ञान का प्रयोग जरूरी नहीं कि सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए किया जाए। प्रौद्योगिकी में हम उन अनगिनत विधियों का उल्लेख करते हैं, जिनसे विज्ञान को मानव सेवा के लिए प्रयुक्त किया जा सके। दोनों में स्पष्ट अन्तर बताने के लिए आणविक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के वर्तमान सर्वाधिक लोकप्रिय क्षेत्रों से उदाहरण दिए जा सकते हैं। यह 'विज्ञान' है, जिसमें भारी धात्विक तत्त्व यूरेनियम के नाभिक से अलग या विखण्डित हुए अंशों की प्रकृति और संख्या का मापन होता है। यह प्रौद्योगिकी है, जिसमें इस वैज्ञानिक 'ज्ञान' का प्रयोग बिजली बनाने के लिए परमाणु बिजलीघर की रूप-रेखा या उसे बनाने में किया जाता है। यह भी प्रौद्योगिकी है, जो नैतिक रंग ले लेती है और नैतिकता तथा अनैतिकता को अंकित करती है। विज्ञान तटस्थ या अनैतिक है और कभी भी नैतिक आचार या मानवीय कल्याण का विरोध नहीं कर सकता, यद्यपि एक वैज्ञानिक और तकनीशियन एक मानव होने के नाते इसका विरोध कर सकते हैं।

- उपरोक्त अवतरण किस प्रकार का है?
(a) अलंकारिक (b) वृत्तात्मक (c) वर्णनात्मक (d) व्याख्यात्मक
- लेखक प्रयत्न कर रहा है
(a) विज्ञान की ओर अच्छे व्यवहार के समर्थन का
(b) हम विज्ञान को लोगों की भलाई के लिए प्रयोग करते हैं, के सुझाव का
(c) भौतिक विज्ञान की अपेक्षा नैतिक विज्ञान के अध्ययन का
(d) विज्ञान और तकनीकी के बीच भेद का
- लेखक के अनुसार विज्ञान
(a) ही केवल एक शक्ति है, जो मानव जाति के भविष्य को निर्धारित करती है
(b) मानवीय भाग्य को निर्धारित करने वाली कुछ शक्तियों में से एक है
(c) भविष्य में मानव कल्याण का केवल यही एक साधन होगा
(d) मनुष्य की प्रगति के रास्ते में आने वाली बहुत-सी बाधाओं में से एक है
- यूरेनियम के केन्द्र के विखण्डन का अध्ययन क्या हो सकता है?
(a) आधुनिक तकनीकी के एक उदाहरण का विचार
(b) विद्युत के सिद्धान्तों के प्रयोग का विचार
(c) किसी भी नैतिक उलझाव के न होने का विचार
(d) सभी मनुष्यों की भलाई के लिए महत्वपूर्ण होने का विचार
- ऊपर दिए गए गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है
(a) विज्ञान के लाभ और हानि (b) विज्ञान के चमत्कार
(c) विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी (d) विज्ञान का बोध

गद्यांश 6

राष्ट्रीय भावना के अभ्युदय एवं विकास के लिए भाषा भी एक प्रमुख तत्त्व है। मानव समुदाय अपनी संवेदनाओं, भावनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति हेतु भाषा का साधन अपरिहार्यतः अपनाता है। इसके अतिरिक्त उसके पास कोई विकल्प नहीं है। दिव्य ईश्वरीय आनन्दानुभूति के सम्बन्ध में भले ही कबीर ने 'गूंगे केरी शर्करा' उक्ति का प्रयोग किया था पर इससे उनका लक्ष्य शब्द-रूपी भाषा के महत्व को नकारना नहीं था। प्रत्युत उन्होंने भाषा को 'बहता नीर' कहकर भाषा की गरिमा प्रतिपादित की थी। विद्वानों की मान्यता है कि किसी एक राष्ट्र के भू-भाग की भौगोलिक विविधताएँ तथा उसके पर्वत, सागर, सरिताओं आदि की बाधाएँ उस राष्ट्र के निवासियों के परस्पर मिलने-जुलने में अवरोधक सिद्ध हो सकती हैं। उसी प्रकार भाषागत विभिन्नता से भी उनके पारस्परिक सम्बन्धों में निर्बाधता नहीं रह पाती।

आधुनिक विज्ञान के युग में यातायात एवं संचार के साधनों की प्रगति से भौगोलिक बाधाएँ अब पहले की तरह बाधित नहीं करतीं। इसी प्रकार यदि राष्ट्र की एक सम्पर्क भाषा का विकास हो जाए, तो पारस्परिक सम्बन्धों के गतिरोध बहुत सीमा तक समाप्त हो सकते हैं।

मानव-समुदाय को जीवित, जाग्रत एवं जीवन्त शरीर की संज्ञा दी जा सकती है, उसका अपना एक निश्चित व्यक्तित्व होता है। भाषा अभिव्यक्ति के माध्यम से इस व्यक्तित्व को साकार करती है। उसके अमूर्त मानसिक वैचारिक स्वरूप को मूर्त एवं बिम्बात्मक रूप प्रदान करती है। मनुष्यों के विविध समुदाय हैं। उनकी विविध भावनाएँ हैं, विचारधाराएँ हैं, संकल्प एवं आदर्श हैं। उन्हें भाषा ही अभिव्यक्त करने में सक्षम होती है। साहित्य, शास्त्र, गीत-संगीत, आदि में मानव-समुदाय अपने आदर्शों, संकल्पनाओं, अवधारणाओं एवं विशिष्टताओं को वाणी देता है। पर क्या भाषा के अभाव में काव्य, साहित्य, संगीत आदि का अस्तित्व सम्भव है। वस्तुतः ज्ञानराशि एवं भावराशि का अपार संचित कोश जिसे साहित्य का अभिधान दिया जाता है, शब्द रूपी ही तो है। अतः इस सम्बन्ध में वहम की किंचित गुंजाइश नहीं है कि भाषा ही एक ऐसा साधन है, जिससे मनुष्य एक-दूसरे के निकट आ सकते हैं। उनमें परस्पर घनिष्ठता स्थापित हो सकती है। यही कारण है कि एक भाषा बोलने और समझने वाले लोग परस्पर एकानुभूति रखते हैं। उनके विचारों में ऐक्य रहता है। अतः राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए भाषा-तत्त्व परम आवश्यक है।

- उपरोक्त अनुच्छेद का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है
(a) व्यक्तित्व विकास और भाषा (b) भाषा बहता नीर
(c) राष्ट्रीयता और भाषा-तत्त्व (d) साहित्य और भाषा-तत्त्व
- भाव एवं विचार-विनिमय का सक्षम साधन है
(a) काव्य साहित्य (b) प्रतीक एवं संकेत
(c) शब्दरूपी भाषा (d) ललित कलाएँ
- 'गूंगे केरी शर्करा' से कबीर का अभिप्रेत है कि ब्रह्मानन्द की अनुभूति
(a) मौनव्रत से प्राप्त होती है (b) अनिर्वचनीय होती है
(c) अभिव्यक्ति के लिए कसमसाती है (d) अत्यन्त मधुर होती है
- मनुष्य के पास अपने भावों, विचारों, आदर्शों आदि को सुरक्षित रखने के सशक्त माध्यम है
(a) व्यक्तित्व एवं चरित्र (b) साहित्यशास्त्र एवं संगीत
(c) भाषा और शैली (d) साहित्य और कला
- भाषा-तत्त्व के अभाव में अस्तित्व सम्भव नहीं है
(a) मानवीय संवेदनाओं का (b) मानवीय आदर्शों का
(c) मानव रचित साहित्य का (d) मानव व्यक्तित्व का

गद्यांश 7

बाल श्रम ने भारतमाता के दैदीप्यमान मस्तक को मलिनतापूर्ण बना दिया है। उद्योगों और विभिन्न कल-कारखानों में हाड़तोड़ परिश्रम करते बच्चों को देख मानवता रो पड़ती है। भट्टियों पर काम करते हुए मालिकों के लिए अपने शरीर का होम करने वाले मासूम आँख, नाक एवं फेफड़ों की गम्भीर बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। इनकी नियति ही ऐसी है कि मनुष्य जीवन के चक्र का अहम भाग जवानी इनके लिए नहीं बना है। ये तो सीधे ही वृद्धावस्था को प्राप्त करते हैं। कथित मालिकों की झिड़कियाँ और गाहे-बगाहे मार झेलते इन बालक-बालिकाओं का जीवन देखकर प्रतीत होता है कि सृष्टि ने अत्यधिक क्रूरता से इनका भाग्य रचा है। नियोक्ताओं के लिए बाल श्रम का उपयोग निरापद है। इसके माध्यम से वे अनुचित लाभ उठाकर अपना पथ कंटकविहीन कर लेते हैं। बाल श्रम रूपी असुर के बन्धन में जकड़ी बालिकाओं और किशोरियों की स्थिति और भी भयानक है। माता-पिता की दारिद्र्य-मुक्ति हेतु भागीरथी प्रयास करती बालिकाएँ स्वयं एक सर्वभोग्या जलधारा के रूप में प्रवाहमान हैं।

जिन्हें जब चाहे ठेकेदार और नियोक्ता पी डालते हैं और अभिभावक विवशतावश चूँ तक नहीं कर पाते। यौनाचार का जो घिनौना चेहरा आज सम्पूर्ण समाज में दिखाई दे रहा है उसके पीछे बाल श्रम की अभिवृद्धि भी प्रमुख रूप से उत्तरदायी है। सिंगापुर, थाइलैण्ड, मलेशिया, इण्डोनेशिया, नेपाल जैसे देशों में पर्यटन के बहाने मौजमस्ती करने आए लोग दस-बारह वर्ष की वय वाली लड़कियों की माँग करते हैं ताकि वे एड्स से बचे रहें। दलालों के लिए यह सौदा फायदे का होता है। वे बाल श्रम में लगी लड़कियों और उनके मजबूर माता-पिता को अपना शिकार बनाते हैं और देह व्यापार के गहरे गर्त में धकेल देते हैं।

- “भारतमाता के दैदीप्यमान मस्तक को मलिनतापूर्ण बना दिया है”। इस कथन में कौन-सा अलंकार अभिव्यक्त हो रहा है?
(a) वक्रोक्ति अलंकार (b) मानवीकरण अलंकार
(c) अन्वोक्ति अलंकार (d) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार
- “सृष्टि ने अत्यधिक क्रूरता से इनके भाग्य को रचा है।” यह कथन इस सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है
(a) माता-पिता ने बच्चों को बाल श्रम के लिए विवश किया है
(b) निर्माण क्षेत्रों के लोगों ने बाल श्रमिकों को बढ़ावा दिया है
(c) भाग्य दोष के कारण बच्चों को बाल श्रमिक बनना पड़ा है
(d) क्रूर नियोक्ता बाल श्रमिकों के भाग्य का अंश गटक जाते हैं
- “नियोक्ताओं के लिए बाल श्रम का उपयोग निरापद है।” इस वाक्य से क्या अभिप्राय है?
(a) बाल श्रमिकों के यौन शोषण में सुविधा
(b) श्रम के सर्वांग शोषण की सुविधा
(c) बाल श्रमिक हानि नहीं पहुँचाते
(d) बाल श्रमिक कम मजदूरी पर मिल जाते हैं
- “बालिकाएँ स्वयं एक सर्वभोग्या जलधारा के रूप में प्रवाहमान हैं।” यह कथन किस तथ्य को रेखांकित कर रहा है?
(a) देश की बालिकाएँ नदियों के समान पवित्र हैं
(b) बालिकाएँ दरिद्रतावश घर-घर जाकर काम करती हैं
(c) बाल यौनाचार ने समाज रूपी सरिता को सर्वभोग्या बना डाला है
(d) बाल श्रम से बालिकाओं के यौन शोषण की प्रवृत्ति बढ़ रही है
- उपरोक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा
(a) बाल श्रम और समाज (b) बाल श्रम
(c) बाल शोषण (d) बाल यौन शोषण

गद्यांश 8

विकास के उच्च शिखर पर पताका फहराते हुए आज हम विज्ञान के उत्कर्ष काल में जी रहे हैं, परन्तु ये कैसी विडम्बना है कि मैला उठाने की सर्वाधिक घृणित प्रथा आज भी हमारे समाज में विद्यमान है। घर-घर मैला साफ करते नर-नारियों के प्रति हमारा समाज संवेदनशील न हो, ऐसा नहीं है। हमारी संवेदनाएँ या तो तीव्रता से उठती नहीं या स्वार्थ के आवरण में आवृत होकर घुट-घुट कर मर जाती हैं। बड़ी नालियों-नालों में नंगे बदन सफाई करते इंसान देखकर अपने सभ्य होने पर हमें लज्जा क्यों नहीं आती? सड़क पर

गाड़ियों, ठेलों और कमर पर मैला उठाते नर-नारियों को देखकर हम शर्म से धरती में क्यों नहीं गड़ जाते? सीवर टैंकों की सफाई के समय जहरीली गैसों के प्रभाव से असमय ही काल-कवलित हो जाने वाले युवकों की माताओं का कारुणिक रुदन का श्रवण हम क्यों नहीं कर पाते?

प्रतिकूल मौसमी दशाओं की मार झेलती, दुधमुँहे शिशुओं को रोता-बिलखता छोड़ घर-घर मैला उठाने वाली नारियाँ भोर होते ही निकल पड़ती हैं। हमारे लिए जो निकृष्ट और घृणित कर्म है, उनके लिए वही एक सत्कर्म है। हम देवत्व का मिथ्यावरण लपेटे घण्टों और शंख ध्वनियों के बीच पुरोहिती का राग अलापते हैं और उन्हें तिरस्कृत कर पास भी नहीं फटकने देते।

गंदगी उठाने वाले इस वन्दनीय समाज की सेवा से हम कभी उन्नत नहीं हो सकते। यह तिरस्कार नहीं वन्दना के पात्र हैं। इस कुप्रथा को समूल उखाड़ फेंकने के लिए सामूहिक प्रयास अपरिहार्य है।

- आधुनिक काल की सर्वाधिक प्रमुख विडम्बना क्या है?
(a) हम विज्ञान के उत्कर्ष काल में जी रहे हैं
(b) हमारे भीतर दया के भाव का लोप हो गया है
(c) हमारे समाज में मैला उठाने की प्रथा विद्यमान है
(d) मैला उठाने वालों के प्रति हम संवेदनशून्य हैं
- “हमारी संवेदनाएँ या तो तीव्रता से उठती नहीं या स्वार्थ के आवरण से आवृत होकर घुट-घुट कर मर जाती हैं।” इस कथन से कौन-सा आशय मेल खाता है?
(a) हम स्वार्थ साधने में रत हैं
(b) स्वार्थपरता के कारण संवेदनाएँ व्यक्त नहीं करते
(c) संवेदनाएँ व्यक्त करने में घुटन अनुभव होती है
(d) संवेदनाएँ क्षीणता के कारण मुखर नहीं हो पातीं
- लेखक ने हमें सभ्य होने पर भी लज्जाहीन क्यों कहा है?
(a) हमारे समाज में आज भी मैला ढोने की प्रथा है
(b) हमने मैला ढोने वालों को तिरस्कृत कर रखा है
(c) विज्ञान के उत्कर्ष काल में भी मैला ढोने की प्रथा प्रचलित है
(d) हम जहरीली गैसों से मृत युवकों की माताओं का करुण क्रन्दन नहीं सुनते
- “हमारे लिए जो निकृष्ट और घृणित कर्म है, उनके लिए वही एक सत्कर्म है।” इस कथन में सत्कर्म से क्या अभिप्राय है?
(a) भीख माँगना
(b) पुरोहिती का राग अलापने का कार्य
(c) शोषित और तिरस्कृत लोगों को मुक्ति दिलाने का कार्य
(d) मैला उठाने का कार्य
- गद्यांश में ‘पुरोहिती का राग अलापने वाले’ कहकर लेखक ने किस भाव को प्रकट किया है?
(a) उपहासात्मक भाव (b) उपदेशात्मक भाव
(c) व्यंग्यात्मक भाव (d) विचारात्मक भाव

उत्तरमाला

गद्यांश 1	1. (d) 2. (a) 3. (c) 4. (c) 5. (b)
गद्यांश 2	1. (b) 2. (b) 3. (c) 4. (d) 5. (b)
गद्यांश 3	1. (b) 2. (a) 3. (c) 4. (b) 5. (c)
गद्यांश 4	1. (b) 2. (a) 3. (b) 4. (b) 5. (c)

गद्यांश 5	1. (d) 2. (d) 3. (a) 4. (b) 5. (c)
गद्यांश 6	1. (c) 2. (c) 3. (b) 4. (d) 5. (a)
गद्यांश 7	1. (b) 2. (c) 3. (c) 4. (d) 5. (b)
गद्यांश 8	1. (c) 2. (b) 3. (a) 4. (d) 5. (c)